तंत्र–मंत्र में भी उपयोगी है काली हल्दी

काली हल्दी को सेवनीय तो नहीं, परन्तु 'पूजनीय' रूप में अत्यधिक सम्मान प्राप्त है। अनेक प्रकार के दुष्प्रभावों को शमन करने में यह अचूक सिद्ध होती है।

जी हां यदि किसी व्यक्ति की किस्मत साथ नहीं दे रही है तो उसकी मदद घर में आसानी से मिलने वाली हल्दी कर सकती है।

यहां जानिए हल्दी के कुछ ऐसे उपाय जो निश्चित ही आपकी पैसों से जुड़ी समस्याओं को दूर करेंगे और आपके कार्यों में आ रही रुकावटें भी दूर करेंगे।

सामान्य रूप में हल्दी का रंग पीला होता है। परन्तु इसकी एक जाति काले रंग की होती है। उसे 'कृष्ण हरिद्रा' अथवा 'काली हल्दी' कहते हैं। जहाँ पीली हल्दी पूजा-पाठ, औषधि -निर्माण, तेल- उबटन और विविध खाद्य-पदार्थो में प्रयुक्त होती है, वहीं काली - हल्दी को तान्त्रिक - क्षेत्र में 'धन- वृद्धिकारक वस्तु' के रूप में अत्यधिक मान्यता प्राप्त है। परन्तु यह सरलता से मिलती नहीं। हल्दी का पूरा खेत, पूरा ढेर खोजने पर भी 'काली गाँठ' नहीं मिल पाती है। काली-हल्दी की गाँठ में एक विशेष प्रकार की सुगन्ध होती है- कपूर से मिलती-जुलती! इस सुगन्धित काली हल्दी को 'कचूर' अथवा 'नरकचूर' कहते हैं। खेत या दुकान में पीली हल्दी के मध्य इसे खोजना बहुत दुष्कर कार्य है। अतः जब भी आवश्यकता हो-किसी पंसारी की दुकान या जड़ी-बूटी भण्डार से 'कचूर' के नाम से माँग लें। पहिचान के लिए भी देखें-ऊपर काली और तोड़ने पर भीतर हल्की पीली आभा दिख पड़ती हैं कपूर जैसी सुगन्ध भी आती है। इसे किसी शुभ-मुहूर्त में ले आये, और विधिवत् पूजन करके तान्त्रिक प्रयोग करें। यह धन-सौभाग्य की वृद्धि करने वाली प्रसिद्ध वस्तु है, परन्तु इसका लाभ तभी मिलता है-जब इसकी प्राप्ति और पूजा-प्रयोग में मन्त्र तथा मुहूर्त्त का बराबर ध्यान रखा जाये।

नित्य काली हल्दी को कुंकुम और नागकेशर के साथ घिसकर उस लेप से घर के दरवाजे पर या दहलीज पर स्वास्तिक बनायें तो उस घर में अभाव नहीं, समृद्धि रहती है।

तंत्र-ज्योतिष में भी हल्दी का महत्वपूर्ण स्थान होता है। तंत्रशास्त्र के अनुसार, बगलामुखी प्रतिमा (बगलामुखी की आभा पीले रंग की मानी गई है, इसी वजह से इन्हें पीतिमा की देवी कहा जाता है।) उनके मंत्र का जप पीले वस्त्रों में तथा हल्दी की माला से होता है। इस प्रकार की पूजा से बगलामुखी की विशेष कृपा प्राप्त होती है और भक्त को सभी बाधाओं से मुक्ति मिलती है। शत्रुओं का नाश होता है।

विशेष प्रयोग-

यदि आपको भी पूरी मेहनत के बाद उचित सफलता प्राप्त नहीं हो रही है तो प्रतिदिन सूखे आटे में थोड़ी-सी काली हल्दी मिलाकर गाय को खिलाएं। ऐसा नियमित रूप से प्रतिदिन करें। गाय को शास्त्रों के अनुसार पूजनीय एवं पवित्र माना गया है। गाय में ही सभी देवी-देवताओं का वास है और इसकी पूजा करने से भक्त को भाग्य का साथ मिलता है।

अदृश्य-बाधा-नाशक तन्त्र

काली हल्दी के 7 या 9 या 11 दाने बनायें। उन्हें धागे में पिरोकर, धूप, गूगल या लोबान के धुएँ में शोधकर पहन लें। जो व्यक्ति ऐसी माला गले या भुजा में धारण करता है-वह ग्रह पीड़ा, बाह्य-दोष, अदृश्य-छाया-पीड़ा, टोने-टोटके और नजर आदि से सुरक्षित रहता है।

धन-वर्द्धक तन्त्र

'गुरुपुष्य-योग' में काली हल्दी को सिंदूर और धूप देकर, लाल वस्त्र में लपेटकर-एक दो मुद्राओं सहित बक्से में रख दें। इसके प्रभाव से बक्से में धन की वृद्धि होती रहेगी।

सौन्दर्य-साधना

काली हल्दी का चूर्ण दूध में छानकर चेहरे और शरीर पर लेप करने से सौन्दर्य में वृद्धि होती है। दूध के अभाव में पानी और कोई मीठा तेल भी ले सकते हैं।

उन्माद-नाशक तन्त्र

किसी शुभ दिवस पर पंसारी से काली हल्दी ले आयें। शुद्ध जल में भीगे कपड़े से पोंछकर, इसे कटोरी में रखें और लोबान या धूप की धूनी में शुद्ध कर लें और कपड़े में लपेट कर रख दें।

आवश्यकता पर इसका चूर्ण 1 माशा-ताजे पानी के साथ सेवन करायें तथा एक छोटा टुकड़ा काटकर, उसे धागे में पिरोकर, रोगी के गले या भुजा में धारण करा दें। इस प्रयोग से उन्माद, मिर्गी, पागलपन, भ्रान्ति और अनिद्रा जैसे मानसिक-रोगों में बहुत लाभ होता है।

वशीकरण प्रयोग

चन्दन की भाँति ही काली हल्दी का टीका भी लगाया जा सकता है। यह टीका सम्मोहनकारी होता है। दीपावली की रात्रि में काली हल्दी को घिसकर लक्ष्मी बीसा/चौंतीसा यंत्र भोजपत्र पर बनाया जाय तो बहुत प्रभावकारी होता है।

काली हल्दी न्यौंछावर राशि– 101 रु. प्रति नग

□□□